P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 Vol-I* Issue- VII* October - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 **Remarking An Analisation**

भारतीय जीवन बीमा उद्योग से यूलिप्स पतन की ओर अग्रसर : एक समीक्षात्मक अध्ययन

पी0 के झा
एसोसिएट प्रोफेसर,
वाणिज्य विभाग,
कतरास कॉलेज, कतरासगढ़,
धनबाद, झारखण्ड,
.

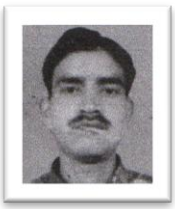

देवेन्द्र कुमार ओझा
शोधार्थी,
वाणिज्य विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग,झारखण्ड

सारांश

21वीं सदी के प्रथम दशक में भारतीय जीवन बीमा व्यवसाय में धूम मचानेवाली यूलिप्स योजनाओं का उदभव सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका में 1960 ई0 में माना जाता है। तदोपरान्त यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया (1964) ने भी 1971 ई0 में म्यूचुअल फण्ड के अंतर्गत यूलिप्स योजनाएँ निवेशकों को बेचा था जो 12–55 वर्ष की उम्र एवं न्यूनतम 75000 रू0 वार्षिक निवेश करने की अर्हता पूरी करते थे। परन्तु उन दिनों ये योजनाएँ उतनी चर्चित नहीं थी जितनी की भारतीय जीवन बीमा कम्पनियों के द्वारा इसे भारतीय बीमा बाजार में उतारने के बाद हुई। इरडा के वार्षिक रिपोर्ट (2000–01) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय जीवन बीमा निगम अपने बाजार सर्वेक्षण के आधार पर बीमा प्लस नामक पहली यूलिप्स योजना ग्राहकों की पसंद, आवश्यकता तथा जीवन बीमा के प्रति बढ़ती जागरूकता के फलस्वरूप बीमा बाजार में उतारी थी। जिसकी बहुत मांग हुई थी। इसके बाद बिडला सन लाइफ ने भी यूलिप्स योजनाओं के साथ बीमा बाजार में प्रवेश किया और उसके बाद तो निजी कम्पनियों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ सैंकड़ो यूलिप्स योजनाएँ जीवन बीमा बाजार में छा गई। भारतीय अर्थव्यवस्था की अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए जीवन बीमा कम्पनियों ने कुल जीवन बीमा प्रीमियम का 32.54% (2004–05) से लेकर 70.30% (2007–08) तक यूलिप्स योजनाओं से प्रीमियम प्राप्त किये जो यूलिप्स की लोकप्रियता तथा आकर्षण की पराकाष्टा को बयां करता है।

विस्तारित रूप में यूलिप्स को यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लांस कहा जाता है जिसमें बीमा आवरण, शेयर बाजार के उछाल का लाभ देने, लचीलापन, कर–बचत योजना आदि के गुण समाहित होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण बीमा ग्राहकों एवं अन्य निवेशकों के दिल में यूलिप्स राज करने लगी थी परिणामतः भारतीय बीमा बाजार बुलंदी पर पहुँच गया था। परन्तु उसके बुरे दिन की उल्टी गिनती वैश्विक आर्थिक मन्दी 2008–09 के साथ प्रारम्भ हो गई थी। वो तो भारतीय घरेलू मांग तथा सुदृढ़ वित्तीय एवं मौद्रिक नीतियों का शुक्र है कि भारतीय शेयर बाजार में शीघ्र ही तेजी पकड़ने लगी और वर्ष 2009–10 के दौरान भी यूलिप्स योजनाओं की बिक्री होती रही थी नही तो वैश्विक आर्थिक मंदी और इरडा द्वारा बनाए गए सशक्त नियम (सितम्बर 2010) ने तो भारतीय जीवन बीमा बाजार से यूलिप्स की दुगर्ति की राह निश्चित कर ही दी थी। वर्ष 2007–08 की अवधि में भारतीय कुल जीवन बीमा प्रीमियम में यूलिप्स का 70. 30% योगदान था जो बाद के वर्षों में लगातार गिरावट दर्ज करती गयी और वर्ष 2015 में भारतीय कुल जीवन बीमा प्रीमियम में इसकी हिस्सेदारी 12.68% की रह गई थी। वर्ष 2015 से भारत के अनेकों जीवन बीमा कम्पनियाँ यूलिप्स बेचना बन्द कर दी है जिसमें भारतीय जीवन बीमा निगम भी शामिल है। जिन कम्पनियों की जीवन बीमा योजनाओं में दर्जनों यूलिप्स हुआ करती थी अब वे इक्का–दुक्का यूलिप्स बेच रहें हैं। जो एजेन्ट यूलिप्स से कमीशन की मलाई काटते थे अब वे इसके लिए तरस रहें हैं। बीमा एजेन्ट यूलिप्स बेचना नहीं चाहते हैं वे यूलिप्स ग्राहकों से मुँह छिपा रहें हैं क्योंकि उनकी बहुत बदनामी हुई थी जिसके लिए वे स्वयं भी कम जिम्मेदार नहीं थे। बीमा ग्राहकों का यूलिप्स से बिल्कूल मोहभंग हो गया है। कुछ एक शिक्षित तथा पेशेवर निवेशक हैं जो यूलिप्स पर निवेश करके शेयर बाजार में आए उछाल (2016 के प्रारंभिक क्वार्टर 27000 अंकों के साथ सेंसेक्स) का लाभ ले रहें हैं। फलतः जीवन बीमा कम्पनियों की यूलिप्स योजनाओं का व्यवसाय पतन की ओर उन्मुख हो गया है।

मुख्य शब्द : यूलिप्स, इरडा, वैश्विक आर्थिक मंदी, शेयर बाजार (सेंसेक्स)

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 Vol-I* Issue- VII* October - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 **Remarking An Analisation**

प्रस्तावना

विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या तथा चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश भारत अपनी नई आर्थिक नीतियों (1991) के कारण पूरी तरह से विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ चुका था। वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण के परिणामस्वरूप भारत में विदेशी संस्थागत निवेश तथा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के कारण भारतीय उद्योग जगत में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी साथ ही भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार विकास करने लगा। फलतः भारत का आर्थिक विकास दर, विदेशी मुद्रा भण्डार, भारतीय स्टॉक मार्केट आदि दिनोदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर होते चले जा रहें थे। भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार विश्व में सभी विकसित एवं विकासशील देशों के साथ प्रमुखतः संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सम्पन्न होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में तेजी बनी हुई थी। (आर्थिक मंदी 2008–09 की पर्वू अवधि में) विकास दर, विदेशी मुद्रा भण्डार, विदेशी संस्थागत निवेश, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज आदि क्रमशः 9.3%, 8.7%, 309.7 बिलियन डॉलर, 16040 मिलियन डॉलर, 21000 अंकों के उच्चतम बिन्दु पर थे।

संयुक्त राज्य अमेरिका से प्रारम्भ होकर आर्थिक मंदी 2008–09 का दुष्प्रभाव पूरे विश्व में व्याप्त हो गया। फलतः भारतीय अर्थव्यवस्था भी इस मंदी से अछुता नहीं रह सका और इसका बुरा प्रभाव भारत के आर्थिक विकास (गिरकर 6.8%) औद्योगिक विकास दर (गिरकर 3.2%) विदेशी मुद्रा भण्डार (252 बिलियन अमेरिकी डॉलर), विदेशी संस्थागत निवेश (ऋणात्मक 8857 मिलियन अमेरिकी डॉलर) बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (लगभग 8400 अंक के न्यूनतम बिन्दु) पर दृष्टिगोचर होने लगा।

भारत के घरेलू मांग में वृद्धि, निर्यात व्यापार पर अल्पनिर्भरता, राष्ट्रीयकृत बैंकों के सशक्त विनियमन, सुदृढ़ मौद्रिक तथा वित्तीय नीतियाँ एवं आर्थिक सुधार कार्यक्रमों के कारण भारत पर वैश्विक आर्थिक मंदी 2008–09 का ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा फिर भी इसने भारतीय शेयर बाजार की कमर तोड़ दी जिसके कारण प्रतिभूतियों के मूल्य में भारी कमी आ गई। उन दिनों भारतीय बीमा क्षेत्र में व्यापक सुधार एवं विकास में तेजी की स्थिति बनी हुई थी इससे आकर्षित होकर निवेशकों ने लोकप्रिय यूलिप्स योजनाओं के माध्यम से करोड़ों–अरबों का निवेश किया था जो प्रत्यक्ष रूप से स्टॉक मार्केट में विनियोजित था। वैश्विक आर्थिक मंदी 2008–09 की क्रुर दृष्टि ने यूलिप्स योजनाओं के माध्यम से निवेशित करोड़ों अरबों रू0 को डूबा दी। इस मंदी ने भारतीय जीवन बीमा व्यवसाय में भूचाल उत्पन्न कर दिया तथा यूलिप्स योजनाओं पर कहर बरपा दी।

21वीं सदी के प्रारम्भ के साथ यूलिप्स बीमा योजनाओं का भारतीय जीवन बीमा क्षेत्र में उदय हुआ था। विभिन्न विकल्पों से युक्त इन योजनाओं की राशि का अधिकतम हिस्सा इक्विटी फण्ड में निवेश किया गया था जिसका सीधा संबंध शेयर बाजार से था। यूलिप्स योजनाएँ शैशव काल में ही थी (भारतीय जीवन बीमा क्षेत्र की दृष्टि से) की उसी समय 2008–09 में अमेरिका में आर्थिक मंदी का दौर शुरू हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका के देखते–देखते सैंकड़ों बैंक तथा वित्तीय संस्थाएँ एवं अन्य कम्पनियाँ बंद हो गई। अमेरिकी मंदी ने बिट्रेन, फ्रांस, जापान, चीन, भारत, सिंगापुर आदि विश्व के प्रायः सभी विकसित तथा विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था को अपने प्रकोप में ले लिया। इस आर्थिक मंदी का सबसे बुरा प्रभाव विश्व के प्रमुख शेयर बाजारों पर पड़ा। भारतीय सेंसेक्स जो उस समय अपनी वृद्धि के चरम पर था यकायक धराशायी हो गया। 2008 अगस्त–सितम्बर में सेंसेक्स लगभग 22000 के आँकड़ों पर था जो अगले छः महिने में गिरते–गिरते 8400 अंक पर आ गया था। सभी छोटी–बड़ी कम्पनियों के अंशों का बाजार मूल्य गिर गया। आर्थिक मंदी के इस भयंकर मार से छोटे–बड़े सभी निवेशक कराहने लगे। चूँकि यूलिप्स बीमा योजनाएँ खरीदने वाले पॉलिसी धारकों का भी धन शेयर मार्केट में यूनिट के माध्यम से लगा हुआ था। फलस्वरूप उन्हें भी आर्थिक मंदी का शिकार होना पड़ा। पॉलिसी धारकों ने मंदी की बगैर कल्पना किए अपने भारी–भरकम बचत यूलिप्स योजनाओं में अधिकतम लाभ कमाने तथा धन वृद्धि के लालच से लगा रखें थे परन्तु परिणाम ठीक उसके विपरीत हुआ। जब कुछ यूलिप्स योजनाओं की परिपक्वता अवधि आयी तो उस समय वैश्विक आर्थिक मंदी का प्रकोप चल रहा था। परिणामतः उनके द्वारा निवेश किए गए धन की वृद्धि की बात तो दूर निवेशित राशि का आधा से अधिक हिस्सा डूब चुका था। सभी बीमा कम्पनियों के यूलिप्स योजनाओं में किए गए निवेश का बुरा हाल था। यूलिप्स योजनाओं को खरीदने वाले के पास रोने के अलावे कोई दूसरा विकल्प नहीं था। चारों तरफ इन योजनाओं की आलोचना होने लगी। यूलिप्स योजनाओं का बाजार गर्दिश में पड़ गया। यूलिप्स के संबंध में सभी लोग डरे सहमे हुए थे। अतः वे अब इन योजनाओं को खरीदने में घबड़ाहट और असुरक्षा महसूस करने लगे। बीमा कम्पनियों तथा बीमा धारकों दोनों की हित खतरे में पड़ गई।

भारतीय बीमा बाजार में लहर उत्पन्न करने वाली तथा जीवन बीमा कम्पनियों के बीमा व्यवसाय का आधारस्तम्भ एवं बीमा निवेशकों की सबसे लोकप्रिय बीमा योजना के रूप में पहचान बना चुका यूलिप्स पर वैश्विक आर्थिक मंदी (2008–09) का नाकारात्मक प्रभाव तथा उसके भविष्य के लिए खतरा उत्पन्न करने वाली विकट समस्या उत्पन्न हो गई। दिनों–दिन यूलिप्स के बीमा व्यवसाय में गिरावट तथा इसके प्रति बीमा धारकों का मोहभंग होने लगा जिससे यूलिप्स योजनाओं की बिक्री कठिनतर होती चली गई। जिसे निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 Vol-I* Issue- VII* October - 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 **Remarking An Analisation**

तालिका

विवरण	वर्ष							
	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015
यूलिप्स पॉलिसी की संख्या हजार में	–	70443	79835.29	71952.42	60594.12	44690.72	–	–
यूलिप्स से प्राप्त प्रीमियम	141549.75 करोड़ रू0	90488.28 हजार रू0	115469.44 करोड़ रू0	108991.71 करोड़ रू0	69649.92 करोड़ रू0	49422.99 करोड़ रू0	37546.82 करोड़ रू0	41616.94 करोड़ रू0
भारतीय जीवन बीमा उद्योग में यूलिप्स का हिस्सा (% में)	46.14	40.87	45.52	37.37	24.26	17.20	11.94	12.68

उपरोक्त तालिका में यूलिप्स बीमा योजनाओं का भारतीय जीवन बीमा व्यवसाय के परिप्रेक्ष्य में निष्पादन परिणाम को प्रस्तुत किया गया है जो इस आलेख के शीर्षक को चरितार्थ करने हेतु पर्याप्त सूचनाएँ प्रदान करती है। ज्ञात सूत्र से पता चला है कि वर्ष 2007 में यूलिप्स योजनाओं का योगदान भारतीय जीवन बीमा उद्योग में 56.92% था जो वैश्विक मंदी तथा इरडा के नए दिशा निर्देश क्रमशः 2008–09 एवं सितम्बर 2010 के प्रभाव में आने के कारण वर्ष 2008 के बाद यूलिप्स ने पॉलिसी संख्या, प्राप्त प्रीमियम एवं जीवन बीमा उद्योग में अपना हिस्सा में लगातार गिरावट दर्ज किया है जो भारतीय जीवन बीमा उद्योग, नए कम्पनियों के प्रवेश, एजेन्ट, पूँजी बाजार आदि के लिए चिंताजनक दृश्य उत्पन्न करता है। कुल जीवन बीमा प्रीमियम में वर्ष 2008 में यूलिप्स का हिस्सा 46.14% था जो बाद के वर्षों में घटते हुए वर्ष 2015 में 12.68% हो गया। यूलिप्स जीवन बीमा प्रीमियम वर्ष 2008 में 141549.75 करोड़ रू0 से उत्तरोत्तर घटते हुए वर्ष 2015 में 41616.94 करोड़ रू0 हो गया था। यूलिप्स का नया पॉलिसी तथा नया प्रीमियम वर्ष 2014 से अत्यन्त सिकुड़ गया है अथवा नगण्य हो गया है क्योंकि अधिकांश जीवन बीमा कम्पनियाँ यूलिप्स बेचना छोड़ चुकी हैं। जैसे कि भारतीय जीवन बीमा निगम के खाते में यूलिप्स पॉलिसी की संख्या 2008 के पूर्व करोड़ों में थी परन्तु वर्ष 2015–16 में एक भी यूलिप्स पॉलिसी नहीं है।

हाँ, यह सत्य है कि मुख्य निजी जीवन बीमा कम्पनियाँ TATA AIA, ICICI PRU आदि कम्पनियाँ आज भी यूलिप्स योजनाएँ बेचकर यूलिप्स की उपस्थिति बीमा बाजार में बनाई हुई है नही ंतो वैश्विक आर्थिक मंदी 2008–09 तथा इरडा के द्वारा 150% तक किया गया कैप, अभिकर्ताओं का कमीशन में भारी कटौति, 5 वर्ष का दीर्घकालीन योजनाकरण (5 वर्ष तक निकासी पर प्रतिबन्ध), अधिकांश व्ययों एवं प्रभारों पर नियंत्रण आदि व्यवस्थाओं ने भारतीय जीवन बीमा उद्योग से यूलिप्स के पतन की राह निश्चित कर दी है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. यूलिप्स का परिचय प्रस्तुत करना ।
2. यूलिप्स का वैश्विक आर्थिक मंदी की पूर्व अवधि में व्यवसायिक स्थिति का अध्ययन करना ।
3. वैश्विक आर्थिक मंदी 2008–09 की जानकारी तथा प्रभाव का अध्ययन करना।
4. वैश्विक आर्थिक मंदी के पाश्चात्य अवधि में यूलिप्स से संबंधित निष्पादन का अध्ययन करना।
5. भारतीय जीवन बीमा उद्योग में यूलिप्स व्यवसाय में गिरावट का अध्ययन करना।

अध्ययन अवधि

वर्ष 2008 से वर्ष 2015 तक यूलिप्स के व्यवसायिक निष्पादन परिणाम का अध्ययन।

शोध विधि

प्राथमिक विधि तथा सहायक शोध विधि पर आधारित शोध समंक।

निष्कर्ष

यूलिप्स से संबंधित उपरोक्त अध्ययनों के उपरान्त यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होती है कि वर्तमान सदी के प्रथम दशक में जीवन बीमा उद्योग (भारत में) में क्रान्ति लानेवाली यूलिप्स योजनाएँ वैश्विक आर्थिक मंदी 2008–09 एवं इरडा के कड़े नियम (सितम्बर 2010) एवं दिशा–निर्देश के कारण हरेक क्षेत्र में नकारात्मक परिणाम दे रही है। बीमा ग्राहकों द्वारा नकारात्मक मांग तथा अभिकर्ताओं के द्वारा यूलिप्स बिक्रय में अरूचि के कारण यूलिप्स का व्यापार लगातार गिरता जा रहा है। यह बीमा कर्ताओं तथा समुची भारतीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए चिंता की बात है। बीमाकर्ताओं, इरडा तथा अन्य संबंधित पक्षकारों के द्वारा यूलिप्स की पुनर्स्थिति बहाल करने से संबंधित पहल करने की आवश्यकता महसूस की जाती है अन्यथा भारतीय जीवन बीमा बाजार से यूलिप्स का पतन देर–सबेर निश्चित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. इरडा के विभिन्न वार्षिक रिपोर्ट, वर्ष 2008–15
2. मित्रा, देवब्रत व घोष, लाइफ इंश्योरेंस इन इण्डिया अभिजीत पब्लीकेशन, दिल्ली 2010, प्रिन्ट
3. गुप्ता, इंश्योरेंस एण्ड रिस्क मैनेजमेन्ट, हिमालय पब्लिलिशिंग हाउस, मुम्बई 2008
4. वेनुगोपाल, के0 वी0, (2011) '' ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस एण्ड लाइफ इंश्योरेंस सेक्टर इन इण्डिया– ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ एल. आई. सी. विद प्राईवेट सेक्टर,'' इण्डियन जर्नल ऑफ कामर्स एण्ड मैनेजमेन्ट स्टडीज,वोलुम II,(06) पी.पी. 56–61
5. अकुला, आर., एण्ड टी. कान्चु, (2011), ग्रोथ ऑफ यूलिप्स पॉलिसी इन लाइफ इंश्योरेंस सेक्टर–ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ ट्रेडिशनल एण्ड यूलिप्स पॉलिसी, इण्डियन जर्नल ऑफ कामर्स एण्ड मैनेजमेन्ट स्टडीज, वोलुम II इश्यू 02,पी.पी.–190–200